आचार्य विद्यारण्यस्वामी की शिवोपासना

आचार्य विद्यारण्यस्वामी ने अपने गुरु के निर्देशानुसार ग्यारह अनुष्ठान किये। पर कोई परिणाम नहीं निकला। कुछ भी चमत्कार नहीं हुआ। तब उन्होंने स्थण्डिल पर अग्नि प्रज्वलित कर झोली, माला, आसन, पुस्तक आदि सबको अग्निसात् कर दिया। बस, केवल एक श्रीयन्त्रमय शिवलिङ्ग ही हाथ में बचा था। उसे भी वे अग्नि में डाल ही रहे थे कि एक स्त्री वहाँ आ गयी और बोली– 'महाराज! आप यह क्या कर रहे हैं।' उन्होंने कहा कि 'पूजा–पाठ, उपासना सब पाखण्ड है, इसलिये मैं इन सबों को जलाकर लोगों को सचेत करूँगा कि वे उपासना छोड़कर अन्य पुरुषार्थ एवं परिश्रमों का आश्रय लें।' इस पर वह स्त्री बोली कि 'यह सब तो ठीक है, पर जरा आप अपने पीछे देखिये कि वहाँ क्या हो रहा है।'

विद्यारण्य ने जब पीछे देखा तो वह स्थण्डिलाग्नि उनके पीछे ही दिखायी दी और उसमें ऊपर से बड़े–बड़े पत्थर गिरकर फूटने लगे। वे घबड़ाकर खड़े हो गये और धीरे–धीरे अग्नि से दूर हटने लगे। तबतक लगातार ग्यारह पत्थर आकाश से गिरकर भयंकर ध्वनि करते हुए अग्नि में नष्ट हो गये। उन्होंने सोचा कि वह स्त्री इस विषय में कुछ अवश्य जानती होगी, क्योंकि उसी ने पीछे देखने को कहा है। पर जब वे स्त्री को खोजने लगे तो वह कहीं न दीखी। पार्श्ववर्ती उपवन की झाड़ियों में भी उसे चिल्लाकर पुकारा पर वह नहीं आयी। अन्त में आकाश से एक ध्वनि आयी कि तुम घोर नास्तिक हो। मैं तो ठीक समय पर आ गयी थी। पर तुम्हारी गुरु और शास्त्रों में श्रद्धा नहीं थी। अतः तुमने सबको जला दिया, गुरु का अपमान किया और नास्तिकता का प्रचार करने को उद्यत हो गये थे। अब भला बताओ तुम्हें किस देवता का दर्शन होगा और कौन–सी सिद्धि प्राप्त होनी चाहिये। तुम्हारे ग्यारह जन्मों के पाप थे जो ग्यारह पहाड़ के रूप में गिरकर अग्नि में नष्ट हुए। अब पुनः गुरु के चरणों का आश्रय ग्रहण करो।

विद्यारण्य ने रोते हुए अपने गुरु के चरणों में गिरकर यह सारी घटना सुनायी। उनके गुरु अत्यन्त कृपालु थे। उन्होंने उन्हें पुनः दूसरी माला, झोली और पुस्तकें आदि दे दीं और कहा कि तुम्हें एक ही अनुष्ठान से भगवती का सम्यक् दर्शन एवं ज्ञान प्राप्त हो जायगा। फिर सब कुछ वैसा ही हुआ। शंकराचार्य के सम्प्रदाय में वे ही सबसे बड़े विद्वान् हुए। फिर उन्होंने श्रीविद्यार्णव, नृसिंहोत्तरतापिनी उपनिषद्–भाष्य आदि विशाल मन्त्रोपासना–ग्रन्थ, जीवन्मुक्ति–विवेक, उपनिषद्–भाष्य, वेद,

आरण्यक-भाष्य और पञ्चदशी आदि प्रायः शताधिक छोटे-बड़े ग्रन्थ लिखे[1] तथा देवी से यह भी प्रार्थना की कि जो शुद्ध हृदय से गुरु न मिलने पर मुझे ही गुरु मानकर इन ग्रन्थों की विधिपूर्वक उपासना करे तो उसे आप शीघ्र दर्शन दें, अन्यथा कलियुग में सभी नास्तिक हो जायँगे। ये ही विद्यारण्य भगवान् शंकर की कृपा से शृंगेरी मठके आचार्य हुए और प्रायः सौ वर्षों से अधिक दिनोंतक जीवित रहे। इन्होंने काश्मीर तथा विजयनगर दो विशाल सम्राज्यों की स्थापना की थी, जिनकी राजधानियाँ श्रीयन्त्र पर स्थित होने के कारण श्रीनगर तथा विद्यानगर(विजयनगर) के नाम से प्रसिद्ध हुईं। दोनों के शासक नरेश इनके अत्यन्त अनुगत शिष्य थे और साम्राज्यों का सीधा संचालन इनके ही हाथों में था।

संसार में वैष्णव, शैव, गाणपत्य और शाक्त आदि अनेक प्रकार के मत प्रचलित हैं और सब के सब अपने-अपने इष्ट को सबसे श्रेष्ठ मानते हैं किन्तु इससे उस परमेश्वर का महत्त्व बढ़ता ही है, घटता नहीं। तथापि अपने उपास्यदेव को दूसरों के आराध्यदेव से भिन्न और श्रेष्ठ कहकर उनके इष्ट की निन्दा दुःख एवं नरक को देनेवाली है। शास्त्रों ने मनुष्यों की रुचि-भिन्नता को देखकर, उनके कल्याण के निमित्त विभिन्न पथों का निरूपण किया है।

परब्रह्म तो एक ही है। वही भक्तों की रुचियों के कारण अथवा भक्तों की पुकार पर या उन्हें आनन्द प्रदान करने के लिये भिन्न उपास्यों की आकृति धारण कर लेता है। इसलिये विभिन्न देवों या इष्टों में भेदबुद्धि को छोड़कर सदा अपने पूज्य इष्टदेव की अर्चना तथा उपासना श्रद्धापूर्वक करनी चाहिये। 'पंचदशी' में विद्यारण्य मुनि ने इस विषय का बड़ा सुन्दर निरूपण किया है; वे कहते हैं-

अन्तर्यामिणमारभ्य स्थावरान्तेशवादिनः।
सन्त्यश्वत्थार्कवंशादेः कुलदैवतदर्शनात्।।
तत्त्वनिश्चयकामेन न्यायागमविचारिणाम्।
एकैन प्रतिपत्तिः स्यात्साऽप्यत्र स्फुटमुच्यते।।
मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।
अस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्।।
इति श्रुत्यनुसारेण न्याय्यो निर्णय ईश्वरे।
तथा सत्यविरोधः स्यात्स्थावरान्तेशवादिनाम्।। (पंचदशी 6/121-124)

1. इन्हें वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायणाचार्य के भाई के रूप में जाना जाता है। ये माधवाचार्य के रूप में भी जाने जाते हैं। संन्यासोपरान्त ये विद्यारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। कुछ लोग कहते हैं कि सायणाचार्य ने ही माधव के नाम से अनेक ग्रन्थ एवं भाष्य लिखे। सच्चाई चाहे जो भी हो परन्तु इस बात में सन्देह नहीं किया जाता कि माधव एवं सायण समान रूप से बुद्धिमान् एवं विद्वान् थे। फलस्वरूप जो भाष्य आदि सायणकृत बताये जाते हैं वे माधव द्वारा भी लिखे जा सकते हैं।

अर्थात् अन्तर्यामी ईश्वर से लेकर स्थावरपर्यन्त को ईश्वर माननेवाले संसार में पाये जाते हैं; क्योंकि पीपल, आक और बाँस आदि भी लोगों के कुलदेवता देखने में आते हैं। अतः तत्त्व-निश्चय की इच्छा से श्रुति-स्मृति का विचार करनेवाले पुरुषों के लिये एक ही शास्त्र-सिद्ध मार्ग है जिसका यहाँ स्पष्ट निरूपण किया जाता है। वह यह कि माया अर्थात् प्रकृति को जगत् का उपादान कारण और मायाधिष्ठाता मायोपाधिक अन्तर्यामी को निमित्त कारण समझना चाहिये। क्योंकि यह सारा ब्रह्माण्ड मायी महेश्वर के अंश रूप ईश्वरात्मक जीवों से ही व्याप्त है। श्रुति के अनुसार ईश्वर के विषय में यही निर्णय युक्ति-युक्त है, क्योंकि ऐसा करने पर सारे ईश्वरवादियों का परस्पर सारा विरोध दूर हो जाता है।

आगे चलकर विद्यारण्य स्वामी फिर कहते हैं-

ईशसूत्रविराड्वेधोविष्णुरुद्रेन्द्रवह्नयः।
विघ्नभैरवमैरालमारिकायक्षराक्षसाः।।
विप्रक्षत्रियविट्शूद्रा गवाश्वमृगपक्षिणः।
अश्वत्थवटचूताद्या यववीहितृणादयः।।
जलपाषाणमृत्काष्ठवास्याकुद्दालकादयः।
ईश्वराः सर्व एवैते पूजिताः फलदायिनः।।
यथा यथोपासते तं फलमीयुस्तथा तथा।
फलोत्कर्षापकर्षौ तु पूज्यपूजानुसारतः।। (पंचदशी 6/206-209)

अर्थात्-ईश्वर, हिरण्यगर्भ, विराट, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि, यम, भैरव, मैराल, मारिका, यक्ष, राक्षस, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, गाय, घोड़ा, हरिन, पक्षी, पीपल, बड़ और आम आदि तथा जौ, धान, तिनके आदि और पानी, पत्थर, मिट्टी, लकड़ी तथा वसूला और कुदाल आदि-ये सब के सब ईश्वररूप ही हैं और विधिवत् पूजे जाने पर यथेष्ट फल के देनेवाले हैं। परन्तु फल का उत्कर्ष तथा अपकर्ष तो पूज्य की पूजा के अनुसार होता है। क्योंकि पूजक पूज्य की जैसी पूजा करता है वैसा ही फल पाता है।

उपर्युक्त उद्धरण से यह सिद्ध होता है कि एक नामी के नाम और गुण भले ही अनेक हों परन्तु इन सब भिन्न-भिन्न वाचकों तथा गुणों का लक्ष्य विषय एक ही है। इस प्रकार विद्यारण्य मुनि अद्वैत शिव के उपासक होते हुए भी अन्य विचारधाराओं के प्रति अत्यन्त उदार हैं। उपर्युक्त उद्धरण उनकी उदारता का एक नमूना है।

(यह लेख गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के 'शिवोपासनांक' तथा 'पंचदशी', जो रामकृष्ण मठ, मद्रास से प्रकाशित है, पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀